SEMESTER - 3

CC- 11

South Asia 1950 Onwards

- **Unit -4 : Globalization and its impact on women and society**

  Part4

Vetted by :

प्रो० (डॉ०) सुरेंद्र कुमार

विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

संपर्क : 09835463960

Presented by:

शिप्रा नंदन

अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

संपर्क : 08604171178

nandan.shiprabhu@gmail.com

वैश्वीकरण का जाति व्यवस्था पर प्रभाव :

परम्परागत जाति व्यवस्था शुद्धता और अशुद्धता के सिद्धांत पर आधारित है जिसमे निम्नलिखित विशेषताएं थीं :

* पदसोपान।

* संपर्कों/संबंधों का पृथक्करण।

* व्यावसायिक स्तर पर श्रम विभाजन।

वैश्वीकरण के कारण परम्परागत जाति व्यवस्था में निम्नलिखित तरीकों में परिवर्तन आये है :

* वैश्वीकरण के कारण,आर्थिक अवसरों,शिक्षा और उदार विचारों का विस्तार हुआ है,जिसके परिणामस्वरूप जाति व्यवस्था कमजोर हुई है।

* अंतर्जातीय विवाह अत्यधिक प्रचलित हो रहे हैं और धीरे धीरे इसे स्वीकृत किया जा रहा है।

* औद्योगीकरण के कारण श्रम का पारम्परिक विभाजन विखंडित हो रहा है,इसे वैश्वीकरण द्वारा बढ़ावा दिया गया।

* आधुनिक संचार सुविधाओं के बढ़ते उपयोग,विभिन्न जातियों के लोगों के मध्य बढ़ते समन्वय के कारण जातिवाद की भावना में कमी आई है।

* वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप शहरीकरण में वृद्धि हो रही है,जिसने जीवन के धर्मनिरपेक्ष स्वरुप को सुविधाजनक बनाया है इसी कारण जाति व्यवस्था के संपर्कों के पृथक्करण के पक्ष को प्रभावित किया है।

* हालाँकि इन परिवर्तनों के बावजूद जाति व्यवस्था ने अत्यधिक प्रतिरोध प्रदर्शित किया है और यह अभी भी भारतीय समाज की एक महत्वपूर्ण विशेषता के रूप में विद्यमान है।

वैश्वीकरण के सामाजिक - आर्थिक प्रभाव :

वैश्वीकरण के विश्व बाजार में विभिन्न अर्थव्यवस्थाओं के मध्य पारम्परिक निर्भरता और प्रतिस्पर्धा में वृद्धि की है। यह व्यापर के सन्दर्भ में वस्तुओं और सेवाओं तथा पूंजी के सञ्चालन में परस्पर निर्भरता के रूप में परिलक्षित होता है। इसके परिणामस्वरूप घरेलु आर्थिक विकास पूर्णतः घरेलु नीतियों और बाजार स्थितियों द्वारा निर्धारित न होकर घरेलु एवं अंतर्राष्ट्रीय नीतियों और आर्थिक स्थितियों से प्रभावित होते हैं। वर्त्तमान में भारत की सभी आर्थिक गतिविधियों की दिशा और गहनता व्यापक रूप से वैश्विक अर्थव्यवस्था द्वारा प्रबंधित होती है।

- सकारात्मक प्रभाव :

* वैश्वीकरण की प्रक्रिया के साथ अर्थव्यवस्था के उदारीकरण और निजीकरण सम्बन्धी नीतियों ने भारतीय अर्थव्यवस्था को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। भारतीय अर्थव्यवस्था ने इन नीतियों के प्रति तीव्र और सकारात्मक प्रतिक्रिया प्रदर्शित की है। भारतीय अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर १९८० के दशक की प्रति वर्ष । २९ प्रतिशत से बढ़कर १९९१-९२ से २००५-२००६ के दौरान ६.०६ प्रतिशत तक पहुंच गई। २००३-०४ के बाद कुछ वर्षों में भारतीय अर्थव्यवस्था की वार्षिक दर ८-९ प्रतिशत भी रही।

* वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप अर्थव्यवस्था में नवाचारों में वृद्धि हुई है और देश में स्टार्ट अप संस्कृति को प्रोत्साहन मिला है।

* शेयर बाजार और अंतर्राष्ट्रीय ऋण के माध्यम से वैश्विक पूंजीपति संसाधनों तक पहुंच में वृद्धि हुई है। वैश्विक पूंजीपति संसाधनों तक पहुंच राष्ट्रों और उनके बाज़ारों की आर्थिक क्षमता पर निर्भर होती है

* सार्वजिनक क्षेत्र हेतु पूर्ण रूप से आरक्षित उद्योगों की संख्या में तीव्र गति से कमी आई है।

* सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों में विनिवेश के निर्णय के परिणामस्वरूप दक्षता और योग्यता में वृद्धि हुई है।

* भारत में पर्यटन में वृद्धि एवं पर्यटन स्थलों के विकास के परिणामस्वरूप विदेशी भंडार में वृद्धि हुई है।

* नगरीकरण और औद्योगीकरण में वृद्धि हुई है जिसके परिणामस्वरूप नगरीय केंद्रों के अनियोजित विकास को बढ़ावा मिला है,साथ ही मलिन बस्तियों के विकास में भी वृद्धि हुई है।

* आईटी,दूरसंचार और विमानन जैसे क्षेत्रों का अत्यधिक विस्तार हुआ है। दूरसंचार क्षेत्र में एक उल्लेखनीय क्रांति घटित हुई है। सुधर से पूर्व के काल में यह पूर्णतः केंद्र सरकार के नियंत्रण में था और प्रतिस्पर्धा की कमी के कारण सरकार कभी भी टेलीफोन की मांग को पूरा नहीं कर सकती थी। वस्तुतः एक टेलीफ़ोन कनेक्शन की मांग करने वाले व्यक्ति को टेलीफोन प्राप्त करने से पहले वर्षों तक प्रतीक्षा करनी पड़ती थी।

* वैश्वीकरण का सबसे बड़ा योगदान भारतीयों की रूचि के अनुरूप विभिन्न विशेषताओं वाले उत्पादों का विकास और उनकी गुणवत्ता सुनिश्चित करना रहा है। वर्त्तमान में किसी वस्तु के चयन हेतु विस्तृत विकल्प उपलब्ध है जिसके फलस्वरूप अधिक प्रतिस्पर्धा के कारण उत्पादों की गुणवत्ता बेहतर हो गई है।

* राष्ट्रों और उनके बाज़ारों के आर्थिक क्षमता के आधार पर शेयर बाजार और अंतर्राष्ट्रीय ऋण के मध्यम से वैश्विक पूंजी संसाधनों तक पहुंच।

* वैश्वीकरण के कारण स्वास्थ्य प्रद्यौगिकी तक पहुंच में वृद्धि हुई है। जिसके परिणामस्वरूप स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली में सुधार हुआ है। हालाँकि वैश्वीकरण ने इबोला,कोरोना वायरस जैसी संक्रामक बिमारियों का खतरा भी उत्पन्न किया है।

* वैश्वीकरण ने भारत में शिक्षा क्षेत्रक को भी प्रभावित किया है। वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप विज्ञानं आधारित वैश्विक ज्ञान के बेहतर आर्थिक प्रतिफल के कारण उच्च शिक्षा की मांग में भी वृद्धि हुई है। भूमंडलीकृत विश्व में बेहतर रोजगार प्राप्ति के लिए विश्वविद्यालय प्रशिक्षण की अत्यधिक आवश्यकता हो गई है। इसके अतिरिक्त सामाजिक -राजनीतिक,जनसांख्यिकीय और लोकतांत्रिक आदर्श,पारम्परिक रूप से विश्वविद्यालय शिक्षा से वंचित समूहों को उच्च शिक्षा तक पहुंच प्रदान करने हेतु विश्वविद्यालयों पर दबाओ में वृद्धि करते हैं।भारतीय उच्च शिक्षा क्षेत्रक को विदेशी प्रतिस्पर्धा के लिए खोलने से शिक्षा क्षेत्रक को और अधिक लाभ प्राप्त होने की सम्भावना है।

* सैद्धांतिक रूप में,वैश्वीकरण द्वारा विकासशील देशों में आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के कारण,निर्धनता को कम किया जा सकता है। कुछ विद्वानों ने तर्क दिया है कि व्यापर विकास के लिए हितकर है तो विकास निर्धनता के लिए हितकर है।

* विकासशील देशों का अनुभव सामान्यतः इस अवधारणा का समर्थन करता है क्योकि चीन,भारत और वियतनाम जैसे कई तीव्र संवृद्धि दर वाले देशों में निर्धनता के स्तर में उल्लेखनीय कमी आई है । हालाँकि कुछ आलोचकों ने तर्क दिया है कि चीन में निर्धनता में कमी केवल उसकी अर्थव्यवस्था कि असाधारण वृद्धि के कारण थी। वास्तव में उप सहारा अफ्रीका में निरपेक्ष निर्धनता में एवं अन्य देशों में सापेक्ष निर्धनता में वृद्धि हुई है।

* वैश्वीकरण ने हमारे दृष्टिकोण को उदार बनाया है तथा विश्व में लोगों,परिस्थितियों और समुदायों से सम्बंधित हमारी प्रवृतियों और पूर्वाग्रहों को कम किया है।

- नकारात्मक प्रभाव :

* वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप भारतीय अर्थव्यवस्था पूर्वी एशियाई संकट,यूरोपीय संकट,वैश्विक वित्तीय संकट (२००७-०८) इत्यादि जैसे वैश्विक संकटों के प्रति अधिक सुभेद्य हो गई है।

* वैश्वीकरण ने कई प्रतिष्ठित कंपनियों को प्रतिकूल रूप से प्रभावित किया है। कई कम्पनियाँ वैश्विक कंपनियों से प्रतिस्पर्धा करने में असफल रही।

* सीमा शुल्क में अत्यधिक एवं तीव्र कटौती ने भारतीय उद्योगों के दायरे में स्थित घरेलु बाजार के एक बड़े भाग को छीनकर उसे स्थापित वैश्विक आयातकों को हस्तांतरित कर दिया है।

* वैश्विक प्रतिस्पर्धा के समक्ष अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करने हेतु भारतीय उद्योगों ने वैश्विक प्राद्योगिकियों और स्वचालित मशीनरी को अपनाकर स्वयं को श्रम गहन व्यवस्था से पूंजी गहन व्यवस्था की ओर विस्थापित किया है। इसके परिणामस्वरूप भारत में बेरोजगारी दर में उच्च वृद्धि हुई है। वतमान में यहब भारत सरकार के लिए सबसे बड़ी चुनौती बनी हुई है।

* वस्तुओं और सेवाओं के उपभोक्तावाद में आश्चर्यजनक रूप मर वृद्धि हुई है।

वस्तुत: वैश्वीकरण को सर्वोत्तम रूप से एक दोधारी तलवार के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। इसके प्रभावस्वरूप भारतीय उपभोक्ता सभी उच्च गुणवत्ता युक्त वैश्विक ब्रांड प्राप्त करने में सक्षम हुए हैं। इसके अतिरिक्त इसने

भारत सरकार को विश्व बैंक से ऋण प्राप्त करने में सक्षम बनाकर इसकी विदेशी मुद्रा सम्बन्धी समस्या से भी निपटने में सहायता की है। हालाँकि आलोचकों ने बहरतीये अर्थव्यवस्था पर सरकारी नियंत्रण में आई अत्यधिक कमी तथा घरेलु उद्योग को हुए नुकसान को वैश्वीकरण की असफलताओं के रूप में उल्लेखित किया है।